पशुओ के मुख्य संक्रामक रोग, लक्षण एवं रोकथाम

भाकृअनुप
ICAR

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र
सेवनियां, जिला – सीहोर (म.प्र.)

CRDE

हमारे प्रमुख पालतू पशुओं में गाय, भैस, भेड़, बकरी, सुअर और मुर्गी इत्यादि आते है। इनसे हमे दूध, मांस, ऊन, अण्डा, खाल व खाद प्राप्त होती है। पशुओं से हमारे राष्ट्र को बहुत अधिक मात्रा में खाद्य पदार्थो की आपूर्ति होती है व देश की अर्थव्यवस्था सुद्वढ बनाए रखने मे पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान है। समस्त पशु रोगों में संक्रामक रोगो का सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि जहां एक ओर संक्रामक रोगों के कारण पशुओं का स्वास्थ्य खराब होता है वहीं दूसरी ओर इन रोगों के कारण पशुपालक को आर्थिक क्षति उठानी पड़ती है अतः आवश्यक है कि पशुपालक पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाएं।

थनैला (मेस्टइटिस)

थनैला दुधारू पशुओं में होने वाला एक संक्रामक एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रोग है।

थनैला रोग के कारण :- यह रोग जीवाणु, विषाणु, फफूँद, माइकोप्लाज्मा तथा रिकेट्सिया के संक्रमण से होता है।

संक्रमण :- थनैला रोग एक पशु से दूसरे पशु में फैलता है। यह बीमारी पशुओ को गंदे, गीले व कीचड़ भरे स्थान पर बांधने से होती है । थन में चोट लगने, बछडे द्वारा दूध पीते समय दांत लगने या गलत तरीके से दूध निकालने से इस रोग की संभावना बढती है। इसके संक्रमण को फैलाने में ग्वाले के गंदे हाथ व कपडे, दूध के बर्तनो का साफ न होना व संक्रमित दूध निकालने की मशीन का भी काफी योगदान होता है।

रोग के लक्षण :- इस बीमारी का प्रमुख लक्षण रोगी पशु के दूध में परिवर्तन आना है। सबसे पहले रोगी पशु के दूध में फाइब्रिन के थक्के बन जाते है, जिससे दूध छिछड़े युक्त आता है, तथा दूध के रंग मे परिवर्तन हो जाता है। यदि रोग अधिक तीक्ष्ण है तो अयन व थनों के आस – पास सूजन आ जाती है व दर्द होता है। यदि समय पर उपचार न हो तो थन कडा व अंततः खराब हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूध फट सा जाता है, और फिर खून व मवाद पड जाता है। कभी – कभी दूध पानी जैसा पतला हो जाता है।

रोग की रोकथाम :

- ✓ पशुशाला के फर्श को सूखा रखे, समय – समय पर चूने का छिडकाव करें और मक्खियों का नियत्रण करें।
- ✓ थनो को बाहरी चोट लगने से बचाए।
- ✓ दूध दुहने से पहले थनों को पानी से अच्छी तरह से साफ करें।
- ✓ थनैला बीमारी से ग्रस्त थन का दूध अंत मे अलग बर्तन में दुहें तथा उपयोग में न लाए।
- ✓ दूध पूरा दुहें।
- ✓ स्वस्थ्य पशुओं का दूध पहले व बीमार पशुओ का दूध अंत मे दुहें।
- ✓ दूध दुहने के बाद थनों को कीटनाशक घोल जैसे – आइडोफोर या लाल दवा मे डुबोयें या घोल का स्प्रे करें।
- ✓ दूध दुहने के पश्चात् थन नली कुछ देर तक खुली रहती है, अतः पशु को कम से कम आधा घण्टे तक फर्श पर न बैठने दें।
- ✓ दुधारू पशुओं के दूध की समय – समय पर (माह में 2 बार) मेस्टेक्ट कागज से जॉच करते रहे।

उपचार :- थनैला रोग की पहचान शीघ्र हो जाने से इसका इलाज आसानी से हो जाता है। यदि जीवाणु अयन के अन्दर पहुॅच जाते है तो इसका इलाज काफी कठिन हो जाता है। इसका उपचार निम्नानुसार किया जा सकता है:–

- ✓ रोग ग्रसित अयन पर आयोडिन मल्हम, सुमेग आदि लगाकर मालिस करने से लाभ होता है, पानी में बोरिक एसिड या नीम की पत्तियां डालकर भी अयन को गुनगुने पानी से सेंका जा सकता है।
- ✓ इसके उपचार के लिए अन्तः स्तनीय दवाइयॉ जैसे मेस्टीलेप, टिलोक्स, पेनडिस्ट्रीन एस. एच, मेमीटेल, मेस्टालॉन, टेरामाईसिन आदि का उपयोग करने से काफी लाभ होता है।

खुरपका एवं मुॅहपका (एफ. एम. डी.)

खुरपका मुॅहपका के कारण पशुओं के मरने की सम्भावना बहुत कम होती है, परन्तु उनमें अस्वस्थ्य होने की दर ज्यादा होने से उनके उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता हैं।

बीमारी का कारण :- यह एक संक्रामक (छूत की बीमारी) रोग है। जो एक पशु से दुसरे पशु में तेजी से फैलता है। यह बीमारी विषाणु (वायरस) के कारण पशुओं में होती है।

संक्रमण :-

- ✓ स्वस्थ्य पशु का बीमार पशु के संपर्क में आने से यह बीमारी फेलती है।
- ✓ रोग ग्रसित पशु का दूषित चारा, पानी आदि का उपयोग स्वस्थ्य पशु द्वारा करने पर स्वस्थ्य पशु में यह बीमारी फेलती है।

बीमारी के लक्षण :-

- ✓ पशु के मुँह के अन्दर, गालों में, जीभ में, होठ व तालू में, मसूड़ों में, नथुनों आदि पर छाले हो जाते हैं।
- ✓ छाले होने के कारण मुँह से झागदार लार बहने लगती है।
- ✓ खुरों के बीचो बीच छाले होने के कारण पशु लंगड़ाकर चलता है।
- ✓ पशु सुस्त होकर गर्दन नीची कर खड़ा हो जाता है, तथा दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन घट जाता है।

रोकथाम :-

- ✓ इस बीमारी से बचने का एक सबसे कारगर तरीका टीकाकरण है। वर्ष में दो बार (मार्च–अप्रैल व अक्टूबर–नवम्बर माह में) टीकाकरण करवायें।
- ✓ बीमार पशुओं को स्वस्थ्य पशुओं से अलग सूखे व साफ सुथरे स्थान पर रखें।
- ✓ चूंकि यह एक संक्रामक रोग है, व एक पशु से दूसरे पशु में बहुत तेजी से फैलता है। अतः इस बीमारी से बचने के लिए जिस गॉव में बीमारी फैली है, उसके आस पास के प्रत्येक गॉव में 3 – 4 मीटर लम्बी, 01 मीटर चौडी व 30 सेमी गहरी पादस्नान बनवानी चाहिए। इसमें 01 प्रतिशत नीला थोथा का घोल भरकर सुबह व शाम को पशुओं को इसमें से निकालना चाहिए। पादस्नान ऐसी जगह बनाये जहॉ से सारे गॉव के पशु निकलते हों।
- ✓ पशुशाला को गर्म पानी में 4 प्रतिशत कपडा धोने का सोडा (कास्टिक सोडा) से धोना चाहिए।

उपचार :- चूँकि यह वायरस जनित संक्रामक रोग है, अतः इसको रोकने के लिए निम्नलिखित उपचार किये जा सकते है –

- ✓ रोगी पशु के मुँह के छालों को किसी अच्छे एन्टीसेप्टिक लोशन जैसे – बोरिक एसिड, सुहागा, फिटकरी आदि के घोल से धोना चाहिए। इसके बाद एक भाग सुहागा 4 भाग शहद मिलाकर छालों पर लेप करने से शीघ्र आराम मिलता है।
- ✓ पैरों के छालों व घावों को पानी में 01 प्रतिशत लाल दवा या फिनायल

के घोल से धोने पर भी फायदा होता है।

- ✓ रोगी पशुओं को दिया जाने वाला आहार पौष्टिक, मुलायम व पाचक होना चाहिए।

गलघोटू

यह बीमारी एक जानलेवा संक्रामक बीमारी है, जो प्रायः वर्षाकाल में फैलती है।

बीमारी का कारण :- यह संक्रामक रोग जीवाणु के द्वारा होता है। बाढ ग्रसित क्षेत्रों में तथा पानी जमाव वाले क्षेत्रों में इस बीमारी के कीटाणु ज्यादा समय तक रहते है।

संक्रमण :- दूषित पानी व चारे के द्वारा यह रोग फैलता है। बीमार पशु के स्वस्थ्य पशु के निकट सम्पर्क में आने से फैलता है।

लक्षण :-

- ✓ अचानक तेज बुखार आता है, ऑखें लाल हो जाती है और पशु कांपने लगता है। पशु खाना पीना व जुगाली करना बन्द कर देता है।
- ✓ दुधारू पशुओं में अचानक दूध उत्पादन घट जाता है।
- ✓ पशु के जबडों और गले के नीचे सूजन आ जाती है तथा सांस लेने में कठिनाई होती है और घुर्र – घुर्र की आवाज आती है।
- ✓ जीभ सूज जाती है और बाहर निकल आती है तथा लगातार लार टपकती रहती है।
- ✓ रोगी पशु में उपरोक्त लक्षण दिखाई देने के 1 – 2 दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

रोकथाम :-

- ✓ इस बीमारी की रोकथाम के लिए वर्षा ऋतु से पहले यानि मई – जून में प्रति वर्ष टीकाकरण करवाना चाहिए।
- ✓ रोगी पशु को स्वस्थ्य पशु से अलग रखें तथा दाना, चारा, पानी भी अलग रखें।
- ✓ मृत पशु द्वारा छोडे गये चारे व दाने को जलाकर नष्ट कर दें।
- ✓ पशु आवास को जीवाणु नाशक (लाल दवा) के घोल से धोना चाहिए।

उपचार :- कलमीशोरा, नौसादर, कपूर व सोंठ को गुड़ में मिलाकर रोगी पशु को खिलाएं तथा अजवाईन की धूनी दें। इससे गले का बलगम हट जाता है।

लंगडि बुखार (ब्लैक क्वार्टर)

इस रोग को एक टंगिया, चुरचुरिया, फडसूजन आदि नामों से भी जाना जाता है। यह संक्रामक व जीवाणु से होने वाली बीमारी है। यह रोग तीन वर्ष तक के पशुओं में अधिक होता है।

संक्रमण :- दूषित चारागाहों पर स्वस्थ्य पशुओं के चरने से इस बीमारी का जीवाणु घास द्वारा पशु में प्रवेश कर जाता है। यदि पशु के शरीर पर कोई घाव या खरोंच हो तो इनसे भी जीवाणु शरीर में प्रवेश कर पशु को बीमार कर देते है।

लक्षण :-

- ✓ अचानक तेज बुखार आता है। पिछले पुट्ठों पर सूजन आती है, जो छूने से गर्म होती है। इस सूजन में दर्द होता है, और पशु लंगडाने लगता है। कभी – कभी गले व पीठ पर सूजन व दर्द होता है।
- ✓ लक्षणो के आने के 1 – 2 दिन में पशु की मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के समय बुखार खत्म होने लगता है। सूजन भी ठण्डी पड जाती है, और उसमें गैस होने के कारण दबाने पर चुर्र–चुर्र की आवाज आती है।

रोकथाम :-

- ✓ इस बीमारी की रोकथाम हेतु मई–जून माह में टीकाकरण करायें।
- ✓ स्वस्थ्य पशुओं को उन चारागाहों से दूर रखना चाहिए, जहॉ रोग का संक्रमण हुआ हो।

उपचार :- रोग की प्रारम्भिक अवस्था में प्रौढ पशुओं को पेनिसिलीन और एण्टी लंगडी का इन्जेक्शन दिया जा सकता है।

नोट:- पशुओं में रोग के लक्षण ज्ञात होते ही अपने स्थानीय पशु चिकित्सक की सलाह अवश्य लें।

-:प्रकाशक:-
सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें
सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)
फोन - 07561-281834, ई-मेल : crdekvksehore@gmail.com